1

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-3)

DTVF/18(JS)–HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Deekhinh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 3. 25/02/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	0	3	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Deel

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में आर्य समाज का योगदान

आर्य समाज की स्थापना नवजागरण व सामाजिक सुधार आंदोलन के समय हुई।

समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का मुख्य नारा स्वदेशी, भाषा और धर्म, स्वराज था। समाज के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी ही मुख्य तौर पर चयनित की गई। यहाँ तक कि उनका प्रमुख ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी हिन्दी भाषा में हुई, जिससे राष्ट्रभाषा हिंदी को बढ़ावा मिला।

समाज की संगोष्ठीयों, प्रचार तथा शिक्षण संस्थानों में हिन्दी अनिवार्य भाषा थी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आर्य समाज के 28 नियमों में से 5 वाँ नियम हिन्दी का नियमित अध्ययन था।

इसी स्वदेशी की भावना व प्रचार-प्रसार ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी भाषा का आधार रखा जो कि आगे चलकर लाला लाजपत राय के दयानन्द एंग्लो-वैदिक विद्यालय तथा लाहौर विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा का अनिवार्य होने के रूप में प्रकाशित हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का योगदान

स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख आंदोलनकारियों में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आंदोलन के प्रचार-प्रसार के लिए जनसामान्य को आकर्षित करना आवश्यक था, इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हिन्दी को अपना माध्यम बनाया।

उनका मानना था कि "हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और देवनागरी हमारी राष्ट्रलिपि है।" इसके अलावा विभिन्न पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनका योगदान 'तिलक फॉन्ट' के रूप में अविस्मरणीय है जो कि ~~केसरी~~ 'तिलक केसरी' पत्रिका में सर्वप्रथम प्रयोग किया गया। इसी फॉन्ट के माध्यम से लगभग 190 फॉन्ट्स का निर्माण हुआ जो कि ~~हिन्दी~~ की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए एक प्रमुख स्तम्भ था।

इन्होंने हिन्दी के प्रश्न को अंग्रेजों के सामने उठाने का साहस किया और ~~अपने~~ अन्य क्रांतिकारियों को प्रभावित किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं और अन्य लिपियों का प्रभाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि का निर्माण एक स्वतन्त्र प्रक्रिया न होकर मिश्रित प्रक्रिया थी। इसका आधार पूर्व में प्रचलित पालि, प्राकृत, अपभ्रंश व अवहट्ट में मिलता है। यह अक्षरात्मक लिपि है व जोकि द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं जैसे कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम के प्रभाव से बनी है।

देवनागरी लिपि की व्याकरणिक संरचना संस्कृत पर आधारित थी तथा विभिन्न ध्वनियाँ जैसे ऍ, ऑ (तेलगु) तथा क़, ख़, फ़ (फारसी भाषा) का प्रयोग देवनागरी को पूर्णतया प्रदान करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा अंग्रेजी भाषा के ध्वनियों जैसे 'ऑ' का प्रयोग देवनागरी लिपि में बहुतायत से किया जाता है, जैसे - डॉक्टर, हॉस्पिटल आदि

अतः देवनागरी लिपि का निर्माण सभी भाषा परिवारों के सम्मिलित रूप से हुआ जो कि इसके राष्ट्रीय होने की कसौटी को पूरा करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद हिन्दी को प्राथमिकता तौर पर सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित किया गया तो इसके लेखन हेतु व्याकरणिक संरचना की आवश्यकता पड़ी। जॉन. गिलक्रिस्ट व केलॉग आदि ने व्याकरण का आरंभिक लेखन प्रारंभ किया, जिसमें केलॉग द्वारा रचित 'हिन्दुस्तानी ग्रामर' प्रसिद्ध हुआ।

केलॉग ने व्याकरण के आधारभूत नियम दिये जिनका प्रयोग कामताप्रसाद गुरु व किशोरीदास वाजपेयी ने हिन्दी के मानक व्याकरण की रचना करने के लिए प्रयोग किया।

केलॉग का व्याकरण मुख्यतः संस्कृत भाषा के पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधारित था जिसमें लिंग, वचन, विशेषण तथा सर्वनामों का व्यवस्थित विवरण व नियम दिए गए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) उन्नीसवीं सदी का खड़ी बोली आन्दोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

वैसे तो भारतेन्दु युग में भाषायी द्वैत समाप्त हो गया था, गद्य में खड़ी बोली व पद्य में ब्रजभाषा का उपयोग किया जाने लगा।

लेकिन द्विवेदी युग में भाषा की एकरूपता पर बल दिया गया जिसमें पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी व श्रीधर पाठक आदि शामिल थे।

लेकिन द्विवेदी युग से पहले ही लगभग 1896 ई. के आस-पास अयोध्याप्रसाद खत्री, पद्य में खड़ी बोली आंदोलन का आधार बना चुके थे। इनकी कई कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई, ~~जिसमें~~ जिसमें खड़ी बोली काव्यभाषा में अपनी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सफलता को हासिल करती हुई दिख रही थी।

ध्यातव्य है कि इनके प्रयासों के परिणामों से ही काव्य भाषा में खड़ी बोली का प्रयोग द्विवेदी युग में चरम स्तर पर पहुँच गया।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता के बाद हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किये गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~स्वतंत्रता~~ प्राप्ति पूर्व तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर सर्वसम्मति थी लेकिन ~~स्वतंत्रता के~~ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्पन्न ~~क्षेत्रीयवाद~~ क्षेत्रवाद, भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की माँग ने हिन्दी को भारत की एकमात्र राष्ट्रभाषा होने से खारिज कर दिया।

~~इसी~~ इस संदर्भ में 1 स्थिति यह हुई कि हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा के तौर पर जानी जाती है।

इस संदर्भ में संवैधानिक प्रावधानों के क्रियान्वयन के अलावा राष्ट्रपति द्वारा पारित आदेश 1955 ई. के तहत राजभाषा आयोग - 1955 का गठन किया गया जो कि हिन्दी के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रचार - प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है।
राजभाषा आयोग ने हिन्दी भाषा के मानकीकरण व देवनागरी लिपि के मानकीकरण को अंतिम रूप दिया और हिन्दी को एक बड़े स्तर पर पठन - पाठन, व सीखने का सरल माध्यम बनाया।

1963 ई. में, हिन्दी साहित्य सम्मेलन को राष्ट्रीय महत्व की संस्था के रूप में घोषित किया जिसने साहित्यकारों में अभिरूचि व उत्साहवर्धन किया।

गृहमंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के तीन अनुभाग राजभाषा प्रशिक्षण ~~निदेशालय~~ संस्थान, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, आदि की स्थापना ने हिन्दी के

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वैज्ञानिक लेखन व परिष्कृत होने में सहायता की।

शिक्षा मंत्रालय के अधीन 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' के तहत अनुसंधान व हिन्दी के प्रचार-प्रसार की संभावनाएँ लगातार बढ़ायी गयी हैं।

1963 ई. में हुए संशोधन के तहत हिन्दी को अंग्रेजी के अलावा संघ की राजभाषा के रूप में प्रस्तावित किया गया तथा इसे सम्पर्क भाषा के रूप में बढ़ाने के कदम बढ़ाये गये।

प्रवासी भारतीयों, व भूमंडलीकरण व मुक्त बाजार पर आधारित होने के कारण विज्ञापनों की मॉंग व प्रभावीकरण ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान समय में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की 'ऑफिशियल लैंग्वेजेस' में शामिल करने की प्रक्रिया लगातार जोर पकड़ रही है व सूचना का समाचार प्रसारण तो शुरू भी हो गया है।

लेकिन त्रिभाषा फॉर्मूले के क्रियान्वयन को लेकर राजनैतिक इच्छाशक्ति की कमी व गठबंधन आधारित सरकारों की उपस्थिति ने इसे भारत की ~~सामुदायिक~~ समुचित एकता बनाने से रोक रखा है।

अतः त्रिभाषा फॉर्मूले के प्रतिबद्ध क्रियान्वयन से इसका और परिमार्जन संभव है व समुचित राष्ट्रीय एकता स्थापित की जा सकती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी' विषय पर नातिदीर्घ निबंध लिखिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1900 ई - 1916 ई. के बीच द्विवेदी युग में हिन्दी को न केवल गद्य भाषा के रूप में परिमार्जित किया बल्कि हिन्दी को काव्य भाषा के रूप में भी प्रतिस्थापित किया।

हिन्दी भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता द्विवेदी युग के समानान्तर चल रहे, स्वतंत्रता आंदोलनों में उभरी जहाँ यह न केवल सम्पर्क भाषा व राष्ट्रीय चेतना बल्कि सीखने व प्रयोगशीलता में भी अपनी भूमिका निभा रही थी।

आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मानकीकरण की कसौटियाँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बनाने का प्रयास किया, जिनके आधार पर इनका मानकीकरण हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की भाषाओं, संस्कृत, मराठी, फारसी व अन्य भाषाओं के शब्दों को शामिल करके हिन्दी का समावेशिक शब्दकोश बनाने में इनकी भूमिका अहम रही।

इन्हीं के नेतृत्व में कामताप्रसाद गुरु व किशोरीदास वाजपेयी ने व्याकरण का कार्य किया।

~~किशोरीदास वाजपेयी~~

सावरकर बंधुओं द्वारा लिखी गई 'अ' की बारहखड़ी को स्वीकार करना, मात्राओं का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करना तथा 'रव' को 'ख' लिखना आदि इनके प्रारंभिक प्रयास थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा द्विवेदी जी ने व्याकरण के नियमों को सरलीकरण किया जिससे मानकीकरण प्रक्रिया का तीव्र विकास हुआ। सर्वनामों के साथ परसर्ग सटाकर लिखना, और संज्ञा या कारकों के साथ परसर्ग को हटाकर लिखना इन्हीं के बनाये गये नियम थे।
उदाहरण - उसने, तुमको
राम ने रावण को मारा।

अतः महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन में तथा अपने निबंधों में खड़ी बोली के परिनिष्ठित रूप प्रयोग किया जिससे आगे चलकर मानक हिंदी भाषा का निर्माण हो सका।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का विकास, वास्तविक रूप से 19वीं शताब्दी के आरम्भ से होता है जहाँ अंग्रेजों ने ब्रिटिश अधिकारियों को सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी सीखने के लिए 'फोर्ट विलियम कॉलेज' (1800 ई.) में प्रशिक्षण की शुरुआत की।

इसके संस्थापकों में जॉन गिलक्रिस्ट ने न केवल हिन्दी भाषा के व्याकरण बनाने पर जोर दिया बल्कि उनकी पुस्तक 'ग्रामर ऑफ हिन्दुस्तानी' ने व्यवस्थित गद्य लेखन को गति प्रदान की।

लल्लूलाल जी, सदासुखलाल व इंशा अल्लाह खाँ फोर्ट विलियम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कॉलेज में अध्यापक नियुक्त किए गए व इन्होंने खड़ी बोली के गद्य विकास को दिशा-निर्देशित किया।

इंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' से लेकर राजा शिवप्रसाद सिंह सितारेहिंद व राजा लक्ष्मणसिंह आदि ने खड़ी बोली में गद्य का विकास किया।

'~~[illegible]~~ इस संस्थान के माध्यम से ईसाई मिशनरियों के आगमन व पॉल चेम्बरलीन व पिकॉक ने खड़ी बोली को प्रचार-प्रसार के लिए उपयुक्त समझा। हेनरी बाल बुक ने बाईबिल का हिन्दु अनुवाद किया व हेनरी मार्टिन ने न्यू टेस्टामेंट का।

अतः जान गिलक्रिस्ट व अन्य व्यक्तियों के प्रयासों ने

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी को वह आधार प्रदान
किया जिसका उपयोग कर
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने न केवल
भाषायी द्वैत समाप्त किया बल्कि
नाटकों, उपन्यासों व कहानियों का
व्यवस्थित व आंदोलनकारी
गद्य विस्फोट हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वतंत्रता-आंदोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या आप राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को संतोषजनक मानते हैं? इस स्थिति को और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग श्री राजगोपालाचारी ने संवैधानिक सभा के द्वारा जारी प्रारूप में किया जहाँ ~~अधिकारिक~~ 'नैशनल लैंग्वेज' व 'स्टेट लैंग्वेज' का प्रावधान था। 'स्टेट लैंग्वेज' का अनुवाद 'राजभाषा' किया गया जिसका मतलब संविधान द्वारा प्रशासन, संघ, राज्य की विधान मंडलों व उच्च न्यायलयों के ~~कार्य~~ ~~सम्बन्धित~~ के लिए कामकाजी भाषा।

अनुच्छेद 343 से लेकर 351 व अनुच्छेद 120 एवं 121 में राजभाषा से सम्बन्धित उपबन्ध है जिनका उद्देश्य राजभाषा के प्रसार-प्रसार व इसके संवर्धन पर जोर देना है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन राजभाषा के रूप में ऐसी विशुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया जाने लगा जो कि आमजनता की समझ से बाहर ही लगती है।

राजभाषा आयोग 1955 की सिफारिशों व 'राजभाषा सुधार समिति' के प्रावधानों से हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा दिया लेकिन हिन्दी-अभाषी राज्यों के कर्मचारियों द्वारा विरोध, कार्यसाधक प्रशिक्षण का अव्यवहारिक विचारण आदि ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में चरम स्तर तक पहुँचने से रोका है।

गृह-मंत्रालय के अन्तर्गत स्थापित राजभाषा विभाग व अनुवाद ब्यूरो, प्रशिक्षण संस्थान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदि कार्यरत है लेकिन केवल औपचारिकताएं पूरी करने के उद्देश्य से न कि हिन्दी को अंग्रेजी के समकक्ष महत्व देकर।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में और विकसित करने के लिए सुझावों के तौर पर पहला बिंदु शब्दावली का है, हिन्दी में समन्वित शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए व अंग्रेजी के राजकाजी क्षेत्र में प्रचलित शब्दों को देवनागरी लिपि में लिख सकते हैं।

जो कर्मचारी, अधिकारी हिन्दी का प्रशिक्षण लेकर वेतनवृद्धि का फायदा उठा रहे हैं उनके लिए हिन्दी का उपयोग अनिवार्य कर देना चाहिए। साथ ही हिन्दी के तकनीकी रूप को छोड़कर आम-बोलचाल में प्रचलित भाषा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का प्रयोग किया जाए ताकि लोग अंग्रेजी में दस्तावेजों को प्राथमिकता की जगह हिन्दी दस्तावेजों को पढ़ने में प्राथमिकता दे।

प्रशिक्षण व्यवस्था को सहज व सरल बनाने के लिए निरन्तर नवाचार व अनुसंधान की जरूरत है ताकि राजभाषा हिन्दी एक बोझ न बनकर, दिलों में व अभिव्यक्ति का अनुभव पैदा करें, जिससे इसका समन्वित विकास हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्वाधीनता - आंदोलन का केन्द्र बिंदु बंगाल के बाद महाराष्ट्र ही प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता-आंदोलन की सफलता इस बात पर निर्भर थी कि राष्ट्रीय चेतना, अंग्रेजों के साम्राज्यवादी- विरोधी भावना का प्रचार- प्रसार की व्यापकता कितनी है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी बढ़े।

बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेशी आंदोलन में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास को बढ़ावा दिया। इनका कहना था 'हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और देवनागरी हमारी राष्ट्रलिपि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा उन्होंने कई पत्रिकाओं जैसे 'केसरी तिलक' आदि का प्रकाशन हिंदी में किया ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार हो।

1925 ई. के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया कि कांग्रेस के प्रादेशिक व स्थानीय कार्यकलाप हिन्दी में हो।

हिन्दी प्रचार-प्रसार समिति; वर्धा ने भी राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार बढ़-चढ़कर किया।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्थापित प्रचार सभाएँ महाराष्ट्र मराठी नागरी प्रचारिणी सभा,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत नामदेव आदि धारा के कवियों ने हिन्दी के धार्मिक प्रचार में प्रयोग से राष्ट्रभाषा के विकास को बढ़ावा मिला।

प्रिंटिंग प्रेस व टाईपराइटर के आगमन ने पत्र-पत्रिकाओं, शिक्षण व्यवस्था की सामग्री को बढ़ावा दिया जिससे न केवल स्वदेशी भावना को प्रेरित किया बल्कि एकजुट होकर आयातित चीजों का बहिष्कार करने को गति दी।

अतः महाराष्ट्र व कन्नड़ी प्रेरणा से अन्य राज्यों बंगाल, आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु आदि ने राष्ट्रभाषा के प्रचार को व्यापकता प्रदान की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में काका कालेलकर और मदनमोहन मालवीय के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महात्मा गाँधी द्वारा हिन्दी साहित्य के इन्दौर अधिवेशन में प्रस्तावित नागरी प्रचारिणी सभा को तमिलनाडु व महाराष्ट्र में ~~[illegible]~~ विकास करने में काका कालेलकर की भूमिका अहम रही।

ये राष्ट्रीय प्रचार समिति के अध्यक्ष रहे व इनके नेतृत्व में न केवल मद्रास प्रचार सभा की स्थापना हुई बल्कि पत्र-पत्रिकाओं के हिन्दी में ~~सम्पादन~~ सम्पादन को गति मिली।

पं० मदन मोहन मालवीय के नागपुर अधिवेशन के ओजस्वी भाषण से प्रभावित होकर राजा कांकर ने इन्हें 'हिन्दुस्तान' पत्र का संपादक बनाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन्होंने 'अभ्युदय' पत्रिका का भी संपादन किया जिसकी भाषा हिन्दी ही थी।

इन्हीं के प्रयासों से 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की 1910 ई० में स्थापना हुई जिसने राष्ट्रभाषा हिन्दी के संरक्षण विकास को व्यवस्थित नई दिशा प्रदान की।

मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से ही विभिन्न क्षेत्रों में सुधार समितियाँ व प्रचार समितियाँ गठित हुई, जिनके प्रयासों से हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप व्यापकता मिली।

1936 ई. में उनकी अध्यक्षता वाले ~~सम्मेलन~~ हिन्दी साहित्य के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्मेलन में यह प्रस्ताव रखा गया कि कांग्रेस की सारी कार्यवाही हिंदी में हो।

इससे प्रभावित होकर अन्य आंदोलनकारियों ने हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया और इन्हीं कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में एकरूपता थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) 'परख' की 'कट्टो'

~~[illegible]~~ जैनेन्द्र द्वारा रचित उपन्यास 'परख' की पात्र 'कट्टो' हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखती है। 'कट्टो' के आत्मसमर्पण व मानवीयता ने पाठकों के दिलों पर असीम छाप छोड़ी है।

'कट्टो,' 'बिहारी' को भी उतना ही महत्व देती है जितना कि वो अपने पहले प्रेमी को देती थी, जो उसको अनौपचारिक तौर पर ही चाहता था।

अपने प्रेमी की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो जाने पर वह उसे चालीस हज़ार के नोट देती है, यह उसका त्याग व समर्पण की

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावना को दर्शाती है।

परिस्थितियों के साथ संतुलन बैठाना व संयम बरतना 'करी' के व्यवहार में था, वह कठिनाइयों के सामने साहस व धैर्य रखते हुए अपनी सौतियों को सत्यनिष्ठा व प्रतिबद्धता के साथ जरखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

'प्रगतिवादी लेखक संघ' 1936 ई. में स्थापित हुआ, जिसका उद्देश्य प्रगतिशीलता को उपन्यास में लाना था।

प्रगतिवादी उपन्यास मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है जिसमें सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का मूल आधार आर्थिक व्यवस्था व उत्पादन प्रणाली में बताया गया है।

प्रेमचंद के अंतिम दौर के उपन्यास 'गोदान' में भी प्रगतिवादिता झलकती है क्योंकि पूंजीपतियों द्वारा किसानों के शोषण, विधवापन की समस्या व दलितों की समस्या को समस्या उठाया है।

यशपाल प्रगतिवादी उपन्यासधारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिन्होंने ~~के~~ 'पार्टी कॉमरेड', 'दादा कॉमरेड', 'झूठा सच' व 'दिव्या' आदि उपन्यास लिखे।

हाशिये पर स्थित लोगों को पात्र के रूप में लाना, मजदूर-किसानों की समस्याओं को ~~केंद्र~~ में रखना, पूंजीवादी सामन्ती व्यवस्था का विरोध व यौन-चेतनाओं को सहज रूप में स्वीकारना इस उपन्यास धारा की विशेषता रही है।

अज्ञेय की 'शेखर: एक जीवनी' व रांगेय राघव आदि ने ~~स्वच्छ~~ प्रगतिवादी उपन्यासों का लेखन किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

पद्माकर रीतिबद्ध कवि हैं जिन्होंने लक्षणग्रंथ परंपरा के माध्यम से मुख्यत: श्रृंगार को कविता का विषय बनाया है। इन्होंने संयोग व वियोग श्रृंगार दोनों का मार्मिक वर्णन किया है तथा देहमूलक सौन्दर्यता इनकी कविताओं में झलकती है।

"गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन हैं,
चिक, चंद है चिरागन की माला है,
ज्यों कहे पद्माकर गजक गिजा है,
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

"जो पावस बनाओ तो विरह न बनाओ,
और विरह बनाओ तो पावस न बनाओ।"

ये पंक्तियां इनके वियोग श्रृंगार को प्रदर्शित करती है जिसमें विरह व पावस ऋतु का सम्बन्ध दिखाया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"या अनुराग की फाग लिखो, जहँ ~~झलत~~ रंग किशोर - किशोरी,
राधा संग भिजिगो साँवरो, साँवरो संग भिजिगो गोरी।"

यह संयोग श्रृंगार का वर्णन पद्माकर का रीतिकाल में अप्रतिम है।

पद्माकर के श्रृंगार वर्णन में कृष्ण व राधा को दोनों के चरित व संयोग को दिखाया गया है।

इनकी भाषा, बिम्बात्मकता व मार्मिकता ने अन्य रीतिकालीन कवियों के सामने चुनौती पेश ~~की~~ की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

घनानंद रीतिमुक्त काव्य के रचि हैं जिनका उद्देश्य राजाओं की चापलूसी न करके, कविता व प्रेम के प्रति गहरे उत्तरदायित्व से भरी है।

कविता करना इनका लक्ष्य था -
"लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि तो मेरे कवित्त बनावत।"
अतः भाषा का परिमार्जन व परिनिष्ठता के साथ प्रयोग करना इनकी विशेषता रही है। बिम्बात्मकता व गेयता तो अप्रतिम है जिनकी प्रशंसा आ० शुक्लजी ने भी ~~कि~~ की है - "भाषा का अद्भुत प्रयोग व अचूक परिमार्जन घनानंद के काव्य की विशेषता है।"

~~अति~~ घनानंद ने अनावश्यक अलंकारों से बचते हुए, आम-जन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वाली प्रभावपूर्ण भाषा-शैली का प्रयोग किया है -

"अति सूधौ सनेह को मारग है, जाँ नेक सयानप बाँक नहीं

x x x x

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला,
मन लेहुं, पै देहु छटाँक नहीं।"

अतः घनानन्द ने ब्रजभाषा का प्रयोग काव्य की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए किया व अलंकरण को केन्द्र बनाया नकि चमक-दमक को।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

प्रकृतिवादी हिन्दी उपन्यास-धारा समकालीन उपन्यास की एक शाखा है जिसमें मानव के द्वारा संसाधनों के दुरुपयोग व ~~असम~~ असमतामूलक प्रयोग के परिणामस्वरूप प्रकृति की बिगड़ती हुई स्थिति पर जोर दिया है। उदयप्रकाश, पुन्नाथ सिंह आदि लेखकों ने संथाल क्रांति के माध्यम से आदिम के आत्मकेंद्रित होने के कारण, अन्य वर्गों के लोगों द्वारा उठाये जाने वाले कष्टों का वर्णन किया है।

इन्हीं उपन्यासों आदि के कारण ही पर्यावरणवादी चेतना इस बार फिर से जाग उठी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट'
की अवधारणा को बल मिला है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अवगाहन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9

दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356

ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास का परिचय दीजिये। 20

प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास का युग समय 1900 से 1916 ई. तक माना जाता है। इस समय के उपन्यासों में अलौकिक वर्णनों, आदर्शवादी तत्वों की भूमिका रही। नैतिक मूल्यों की स्थापना करना व यथार्थ से दूरी बनाये रखना प्रेमचन्दपूर्व हिन्दी उपन्यासों की विशेषता रही।

पात्रों को कथानक के अनुसार ढालना व देश-काल तथा वातावरण का अनिश्चित ढाँचा इस काल के उपन्यासों के पाठक-वर्ग को सीमित कर देता है।

देवकीनन्दन खत्री द्वारा रचित 'भाग्यवती' तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षागुरु' इस काल के मुख्य उपन्यास रहे। इनके अलावा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र व सेठ गोविन्ददास आदि ने अनेक उपन्यास लिखे।

लाला श्रीनिवासदास के 'परीक्षागुरु' में दिल्ली एक साहूकार की कहानी है जिसमें उसे विरासत में मिली धन-दौलत को वह वासना व अपव्यय कर देता है और अन्त में कुमति की स्थिति में आ जाता है।

अतः नैतिक शिक्षा देना कि जितनी लम्बी सौर है, उतने ही पैर पसारने चाहिए, इस काल के उपन्यासों के केन्द्र में था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवकीनन्दन खत्री का ~~[illegible]~~ 'चंद्रकांता' इस काल का प्रसिद्ध उपन्यास है जिसमें नौगढ़ के राजकुमार ~~[illegible]~~ व विजयगढ़ की राजकुमारी चंद्रकांता की प्रेम कथा का वर्णन है।

आदर्शवादी व पौराणिक आख्यानों से प्रभावित कथानक व कथावस्तु पर इनका ज्यादा ध्यान रहा।

इन सब उपन्यासों की स्वारतीयता को देखते हुए, प्रेमचन्द ने केवल उपन्यास लेखन की 'कर्मभूमि' बदली बल्कि 'कायाकल्प' भी कर दिया।

हालाँकि, वे शुरुआत दौर में 'समाजोन्मुखी आदर्शवाद' से प्रेरित थे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोहित अन्तिम दौर (~~[illegible]~~ में धर्म पाखण्डवादी व समस्याओं को जनता व प्रजा के सामने नग्न रूप में रखते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'झूठा-सच' में अभिव्यक्त देश-विभाजन की समस्या पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल द्वारा रचित झूठा-सच देश के स्वतंत्रता प्राप्ति के सपनों को साकार देखकर लिखा गया है।

जहाँ एक ओर स्वतंत्रता से पूर्व नये भविष्य के निर्माण के वादे किये जा रहे थे तथा सामाजिक एकता एवं समरसता की स्थापना पर बल दिया जा रहा था लेकिन राजनीतिक महत्त्वाकांक्षियों व सत्ता के मोह ने देश में विभाजन की समस्या को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप न केवल लाखों लोग बेघर हुए बल्कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सांप्रदायिकता की समस्या, महिलाओं के प्रति अत्याचार व स्वतंत्रता के सपने झूठे पड़ते दिखायी दिये।

अतः स्वतंत्रता तो मिली लेकिन जो सपने देखे गये थे वे झूठे निकलने को विरोधाभास ~~मनोभाव~~ मनोभाव से उन्होंने 'झूठा-सच' कहा। चूँकि वे प्रगतिवादी ~~[illegible]~~ विचारधारा से प्रभावित व्यक्ति हैं जिन्होंने आजादी को हाशिये पर स्थित लोगों के दृष्टिकोण से देखा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'झूठा-सच' उपन्यास में इन समस्याओं के अतिरिक्त ~~विभि~~ ~~स्वार्थ~~ समाज में पैदा हुआ जातिगत अवधारणा, साम्प्रदायिक हिंसा व इन सब का परिणाम निम्न वर्ग के लोगों का भुगतना पड़ा।

"राजा लोग व राजनेता, पूँजीवादी तो यह सब देखते रहे।" लेकिन नुकसान तो गरीबों का हुआ। ~~जिससे~~ इस विभाजन ने राजनेताओं को अवसरवादिता प्रदान की तो निम्न वर्ग के लोगों को हिंसा, गरीबी व शोषण।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) स्त्री-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्त्री विमर्श के उपन्यासों का दो रूपों में इतिहास मिलता है एक तो वे उपन्यास जो साहित्य के विकास की धारा में लिखे गए। जिनमें नारी समस्या को केन्द्र में रखा गया जैसे 'सेवासदन' (प्रेमचंद द्वारा लिखित) में वेश्यावृत्ति, दहेज व सामाजिक विडम्बनाओं की समस्या, 'प्रेमाश्रम' में अनमेल विवाह, इसी प्रकार 'यशपाल' द्वारा 'दिव्या' में नारी पराधीनता व धार्मिक रूढ़ियों का विघटन दिखाया गया है। जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित 'त्यागपत्र' व 'निर्मला' में भी नारी समस्या की, उपभोक्तावादी ~~विचारधारा~~ मानसिकता को दिखाया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरी धारा ~~[illegible]~~ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नया उपन्यास के बाद वाले दौर में मिलती है जहाँ महिलाओं ने 'संवेदना' को केवल बाहरी स्तर वाला लेखन बताया है। जबकि 'स्वयं-वेदना' पर आधारित उपन्यास धारा को नारी की मूल समस्याओं से अवगत बताया है।

नारी-विमर्श की लेखिकाओं में से कृष्णा सोबती ने 'मित्रो-मरजानी', व मन्नू भंडारी ने कई उपन्यास लिखे।

इन उपन्यासों से न केवल नारी-अधिकार चेतना की जागृति हुई बल्कि ~~[illegible]~~ लेखन परंपरा में महिलाओं की अभिव्यक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का अवसर प्रदान किया जो कि
अनुभवों व अनुभूतियों के
आधार पर लिखा गया, जिससे
समस्याओं की गंभीरता और
व्यापकता का पूर्ण अंदाजा लगाया
जा सकता है कि पुरुषप्रधान समाज
में महिलाओं को केवल विकास
का आधार माना जाता है न कि
विकास में भागीदार।

Copyright – Drishti The Vision Foundation